साहित्य, समाज केलिए लिखा जाता है। यह तब समाजोपयोगी बन जायेगा, जब उसका विषय मनुष्य व समाज हो । जो साहित्य मनुष्य को अनैतिक वातावरण से बचा न सके, जो उसके मूल्यों को प्रोतसाहित न कर सके, वह वास्तव में सच्चे साहित्य की कोटि में नहीं रखा जा सकता । मानव अपने में स्वतंत्र है । वह विवेकी है । इस विवेक बुद्धि को जागरित करना, उपने करतव्य को पहचानना,प्रेम, त्याग, परोपकार आदि नैतिक मूल्यों को जगाना ही साहित्य का लक्ष्य होना चाहिए । जन-समूह को निराशा के गर्त से ऊपर उठाकर, उनमें आशा का संचार कराना साहित्य का मूल उद्देश्य है । जीवन की वास्तविकता की उपेक्षा करके साहित्या कभी भी आगे नहीं बढ़ सकता । 'मनुष्य को देवता बनानेलायक साहित्य ही सच्चा साहित्य है' इस तत्व को पूर्ण रूप से आत्मसात करनेवाले साहित्यकारों में सबसे प्रमुख है आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी। उनका साहित्य, मनुष्य की विराट गरिमा का साहित्य है। वे मनुष्य को जड़ या पशु नहीं मानते, उसे विकास की अंतिम परिणति स्वीकार करते है।

हिंदी साहित्य को अपने पाण्डित्यपूर्ण चिंतन, वैदुष्यपूर्ण लेखन तथा वैदग्ध्यपूर्ण भाषण से सर्वाधिक प्रभावित करनेवाले साहित्यकारों में आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का स्थान सर्वोपरी है| मूल्यों के संक्रमण के युग में द्विवेदी ने भारत के हज़ारों साल पुरानी परंपरा को आत्मसात् कर, अतीत के उज्जवल इतिहास को समझकर और वर्तमान समाज के जीवन्तबोध को पहचानकर जो कुछ लिखा, वह हिंदी साहित्य जगत में कालजयी ठहरता है| द्विवेदी जी मूलतः आचार्य रामचन्द्रशुक्ल्जी की परंपरा के आलोचक है| उन्होंने शुक्लजी के अनेक विचारों का खंडन करते हुए, अपने साहित्य संबंधी विचरों को खुलकर प्रकट करने का साहसदिखाया है ।द्विवेदी जी साहित्य को किसी एक विशिष्ट काल-सीमा में बाँधकर देखने के पक्ष में नहीं थे| उनके अनुसार साहित्य, मानव जीवन से सीधा उत्पन्न होकर, सीधे मानव जीवन को प्रभावित करता है| साहित्य में उनसारी बातों का जीवन्तविवरण होता है जिसे मनुष्य ने देखा है, अनुभव किया है सोचा है, समझा है| द्विवेदी ने अपने साहित्य-सृजन की आधार शिला इसी स्वानुभूत ज्ञान की नींव पर खड़ी होकर की है|

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, संस्कृति के पुजारी थे| अतः हमारी संस्कृति की उत्कृष्टतायें उनकी रचनाओं में विद्यमान है| भारतीय साहित्य में सभवतः द्विवेदी एकमात्र ऐसा विचारक है, जिनके अन्दर भारतीय संस्कृति तथा इतिहास

की चेतना का संपूर्ण फलक अपनी समग्रता और जीवन्तता में मौजूद है| उनके साहित्य को पढ़कर लगता है, मानों वे भारतीय मनीषा के जीवित प्रतिरूप है| संस्कृति की दृष्टि से आज का युग संक्रांति का है| इस संक्रान्तिकाल में हम अपनी मुट्ठी से उन अनमोलरत्नों को निकालने न दें, जो सहस्राब्दियों से हमारे पास सुरक्षित रखे है| द्विवेदी के अनुसार यदि मनुष्य को संस्कृति के प्रशस्त राजमार्ग पर अग्रसर होना है तो उसे बार-बार सोच-विचार कर, अपना सांस्कृतिक पथ निश्चित करना होगा| जो मनुष्य शुद्ध संस्कार, स्वतंत्र, विमल, विवेक और समता के मार्ग पर आरूढ़ है, वही सुसंस्कृत है| इस पृथ्वी पर जब तक मनुष्य और मनुष्यता जीवित रहेगी, तब तक संस्कृति का यह पावन संस्कार उसका मार्गदर्शन करता रहेगा|

आचार्य द्विवेदी ने संस्कृतिको , देश और काल की सीमाओं से ऊपर रखने का प्रयास किया है| उसके अनुसार जिसे हम संस्कृति कहते है, वह संपूर्ण समष्टि मानव के कल्याण के लिए है क्योंकि वह निर्मात्री शक्ति है, अतः बहुत ही चीज़ों को, जो सड़ी-गली है, छोडती जाती है और जो नये क्षेत्र में आती है उन्हें ग्रहण करती है| संस्कृति मनुष्य के चित्त के संस्कार का परिणाम है|संस्कृति के साथ ही

साथ इतिहास तत्व भी द्विवेदी की रचनाओं में विद्यमान है| ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लेकर, कल्पना का समावेश करते हुए उन्होंने अपनी रचनाओं का सृजन किया है| उनके इतिहास लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्होंने न केवल प्राचीन पोथियों के अनुसन्धान से नये तथ्य दिये, बल्कि उनके अभाव में जो विसंगतियाँ और भ्रांतियाँ फैली हुई है, उन्हें अकाट्य तर्कों से दूर किया|हिंदी भाषा में मिथकों का प्रयोग आदिकाल से ही होता आ रहा है| अपनी मानवतावादी दृष्टिकोण को व्यक्त करने तथा भारतीय इतिहास और संस्कृति की विशिष्टताओं को उद्घाटित करने के लिए अपनी रचनाओं में मिथकों का प्रयोग द्विवेदी ने किया है|

आचार्य द्विवेदी का संपूर्ण साहित्य वर्तमान युग की संवेदनाओं को आत्मसात किए हुए, जीवन के उत्कृष्ट मूल्यों से अनुप्राणित, सुन्दर भविष्य के निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार करता है| उन्होंने 'बाण भट्ट की आत्मकथा', 'चारुचन्द्रलेख', 'पुनर्नवा', 'अनामदास का पोथा', ये चार उपन्यास लिखे हैं| सौ से अधिक निबंध भी उनहोंने लिखी है|'देवदारु', 'अशोक के फूल', 'शिरीष के फूल', 'भारतीय संस्कृति की देन', 'स्वागत', 'वैशाली', 'प्रायश्चित की घड़ी' आदि इनमें प्रमुख हैं| अपने साहित्य संबंधी विचारों को व्यक्त करते हुए उन्होंने कुछ

आलोचना ग्रंथो का सृजन भी किया है| 'सूर साहित्य', 'हिंदी साहित्य की भूमिका', 'कबीर', 'कालिदास की लालित्य योजना', 'सहज साधना' आदि इनमें प्रमुख हैं| उनकी कहानियों की संख्या बहुत कम है, फिर भी छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से उन्होंने वर्तमान समाज की विसंगतियों का चित्रण किया है|मेरे शोध प्रबंध का विषय है इतिहास-संस्कृति-मिथक-के परिप्रेक्ष्य में हज़ारीप्रसाद द्विवेदी की रचनाओं का विश्लेक्षणालमक अध्य्यन । अध्ययन की सुविधा केलिए मैं ने इस शोध प्रबध को पांच अध्यायों मैं विभाजित किया है ।

पहला अध्याय '<u>आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी – व्यक्तित्व एवं कृतित्व;</u> में द्विवेदी का जन्म, बचपन, शिक्षा, नौकरी, वेश-भूषा, पारिवारिक जीवन, पद-पुरस्कार आदि पर विस्तार से वर्णन किया गया है| उनके नाम की सार्थकता पर भी विचार किया है| ज्योतिषी के रूप में आचार्य द्विवेदी प्रसिद्ध थे| लेकिन एक अध्यापक बनना ही उनके जीवन की कामना थी| संस्कृत भाषा से उनका जो लगाव था, अंग्रजी भाषा के अध्ययन में उन्होंने जिन कठिनाईयों का सामना किया इन सभी का, प्रथम अध्याय में वर्णन किया गया है| विश्व कवि रविन्द्रनाथ

ठाकुर तथा शांति निकेतन ने द्विवेदी के जीवन में कहाँ तह प्रभावित किया और अन्य महान व्यक्तियों का प्रभाव उनके जीवन में कौन कौन सा परिवर्तन लाया तथा एक व्यक्ति के रूप में उनकी जो विशेषताएँ थी इन सभी का परिचय प्रस्तुत अध्याय से मिलता है। कृतित्व के संबंध का पूरा विवरण इसमें दिया गया है। द्विवेदी ने कुल चार उपन्यास की रचना की है और सौ से अधिक निबंध भी लिखा है। उनकी समीक्षा, इतिहासग्रंथ, कहानियाँ, कविता,पत्र-पत्रिकायें जैसे संपूर्ण रचनाओं की खोज पहले अध्याय में किया गया है।

दूसरा अध्याय <u>इतिहास-संस्कृति-मिथक'</u> में इन तीनो तत्वों का, विस्तार से विवेचन किया है। संस्कृति में मनुष्य की पूरी जीवन शक्ति शामिल है। यह एक परिष्करण की प्रक्रिया है। इसको व्यक्त करने लायक परिभाषायें , संस्कृति शब्द का अर्थ, इसकी उत्पत्ति तथा विकास, संस्कृति का स्वरूप संस्कृति और मानव का संबंध आदि का इसमें विस्तार सेचर्चा हुई है। साथ ही साथ संस्कृति और सभ्यता के गहरे संबंध को व्यक्त करते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि संस्कृति और सभ्यता, जीवन सरिता के दो ऊँचे और सबल किनारे है, जो धारा को उत्क्रमित और संकुचित होने से रोकती है। यहाँ मिथक शब्द की

उत्पत्ति, परिभाषा, स्वरूप, मिथक निर्माण के बाह्य घटक एवं आंतरिक घटकों का विश्लेषण, आदि का विवरण देते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि यह एक सांस्कृतिक शक्ति है| उसके बाद इतिहास तत्व पर भी विस्तार से वर्णन किया गया है| इसके साथ ही साथ इतिहास शब्द की उत्पत्ति, परिभाषा, इतिहास के तत्व, आदि पर विचार करते हुए यह निष्कर्ष पर पहुँचा है कि यह, मानव के चरित्र की साक्षी है| आदिम मानव से आधुनिक मानव तक वह साक्षी के रूप में चलता आ रहा है|

तीसरा अध्याय <u>'आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के कथा-साहित्य में इतिहास-संस्कृति-मिथक'</u> में पहले आचार्य द्विवेदी के चार उपन्यासों की कथावस्तु पर प्रकाश डालते हुए उसमें संस्कृति, इतिहास और मिथक को ढूँढने की चेष्टा की है| उनका पहला उपन्यास 'बाण भट्ट की आत्मकथा' हर्षकालीन युग की पृष्ठभूमि में लिखा गया है| द्विवेदी ने कुछ ऐतिहासिक तथ्यों को लेकर, कल्पना के सहारे प्रस्तुत उपन्यास की सृष्टि की है| तत्कालीन राजनैतिक तथा सामाजिक वातावरण का चित्रण उन्होंने प्रसंगानुकूल किया है| सुचरिता, उपन्यास के ऐसा एक पात्र है जिसका विवाह बाल्यावस्था में हो चूका था, उसे मालुम भी नहीं था

कि विवाह क्या चीज़ है। निपुणिका, विधवा-जीवन की कहानी है। उपन्यस की नायिका भट्टिनी भारतीय आदर्श नारी का प्रतीक है। समाज को जागृत करना, जनता को प्रबोधित करना जैसे महान उद्देश्य से ही रचनाकार ने प्रस्तुत उपन्यास की रचना की है।

'चारुचन्द्रलेख' द्विवेदी का दूसरा उपन्यास है, जो गरिमामयी शैली में लिखा गया है। इस उपन्यास में मध्यकालीन समाज का चित्र स्पष्ट रूप में दिखाई देता है। मध्यकालीन समाज की अस्तव्यस्तता पर प्रकाश डालते हुए लेखक वर्तमान समाज से जागरूक बनने का आदेश प्रस्तुत रचना के द्वारा देता है। इसका पात्र राजा सातवाहन और रानी चंद्रलेखा देशप्रेम का प्रतीक है। दीन-दुखियों के प्रति मानवता का भाव अहिंसा की प्रेरणा, देश-भक्ति, समाज मंगल आदि प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य है।

द्विवेदी का तृतीय उपन्यास 'पुनर्नवा', गुप्तकालीन पृष्ठभूमि में लिखा गया उपन्यास है। यह प्राचीन भारतीय संस्कृति पर लिखा गया है। इसका केन्द्र हलद्वीप, मधुरा तथा उज्जयिनी है। देश को विदेशी आक्रमणों से मुक्त कराने की प्रेरणा प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य है। इस उपन्यास के द्वारा द्विवेदी कहना चाहते है कि ईश्वर की उपासना के साथ ही साथ मानवता की उपासना भी मनुष्य के लिए अनिवार्य है। देवरात, देश का उद्धार चाहनेवाला है। उच्च आदर्शों को ज़ोर

से पकड़ते हुए वह आगे बढता है। मानवीय जीवन की पुनार्वख्या के भाव को लेकर ही 'पुनर्नवा' का सृजन हुआ है।

द्विवेदी का चौथा तथा अंतिम उपन्यास 'अनादास का पोथा' छान्दोग्य उपनिषद तथा बृहदारप्यक उपनिषदकालीन वातावरण से प्रभावित है। प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा द्विवेदी इस बात को स्पष्टकरना चाहते है कि यदि तपस्वी, नारी के संसर्ग मे आ जाता है, तो उसकी स्थिति विचित्र प्रकार की होती है, यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है। रैक्व की वैश्वानर उपासना समाज मंगल को लक्ष्य करके किया जाता है। सत्य केलिए ज्ञान की, और शांति के लिए, कर्म की आवश्यकता है। यही सन्देश प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा लेखक हमें देते हैं। उनका कहना है कि समाज मेंजाकर दीन-दुखियों को पहचानकर उनकी सेवा करना ही यथार्थ तपस्या है। आचार्य द्विवेदी के इन चारों उपन्यासों में इतिहास, संस्कृति और मिथक का प्रयोग कहाँ तक हुआ है, इसका विश्लेषणात्मक अध्ययन तृतीय अध्याय में मिलता है।

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के द्वारा लिखी गई छोटी-छोटी कहानियों का विश्लेषण भी प्रस्तुत अध्याय का विषय है। हर कहानियों में उन्होंने दो-तीन पात्रों के माध्यम से समाज के उच्च आदर्शों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं। इसमें उनका उद्देश्य महान सिद्ध होता है। 'धनवर्षण' नामक कहानी में उन्होंने

एक ब्राह्मण के माध्यम से वर्तमान समाज की धनलोलुपता का चित्रण किया है| गुरु शिष्य संबंध की पवित्रता, जो भारतीय संस्कृति का मुख्य तत्व है, इसका चित्रण भी प्रस्तुत कहानी में हुआ है| 'मंत्र-तंत्र' कहानी में कहानीकार ने वर्तमान शासक वर्ग की ओर इशारा किया है| 'व्यवसाय बुद्धि' का सन्देश तो यह है कि जाति, कुल, देश, विद्या, आदि सभी के ऊँचा है मानव का चरित्र| द्विवेदी का मानवतावादी दृष्टिकोण प्रस्तुतकहानी में झलक उठता है| 'देवता की मनौती' के द्वारा द्विवेदी ने हमें अहिंसा का असंदेश दिया है| 'अछूत' कहानीमें भारतीय समाज की छुआछुत की समस्या का चित्रण है| 'प्रतिशोध' कहानी में कर्मफल की सार्थकता पर लेखक ने विचार कियाहै| इसमें वे कहते है कि परोपकार, करुणा, भाईचारा, अहिंसा, अपनी गलती पर पछताने का मन आदि गुण मनुष्य को देवता बनाता है| द्विवेदी की इन कहानियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके, इनमें संस्कृति, मिथक और इतिहास को ढूँढने के साथ ही साथ इन कहानियों की प्रासंगिकता पर भी तृतीय अध्याय में चित्रण किया है|

चौथा अध्याय 'आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधो में इतिहास-संस्कृति- मिथक 'में द्विवेदी के सौ से अधिक निबंधो का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए उनमें इन तत्वों को ढूँढ निकालने का प्रयास हुआ है। 'अशोक के फूल', 'कुटज', 'कल्पलता', 'आलोकपर्व', 'विचार-प्रवाह', 'सभ्यता और संस्कृति,' 'विचार और वितर्क' आदि उनके प्रमुख निबंध संग्रह हैं। 'देवदारु', 'अशोक के फूल', 'कुटज', 'हिमालय', 'सभ्यता और संस्कृति', 'भारतीय संस्कृति' की देन' आदि प्राचीन तथा नवीन भारतीय संस्कृति को व्यक्त करनेलायक निबंध है तो 'घर जोड़ने की माया', 'प्रायश्चित की घड़ी' आदि में उन्होनें अपनी दार्शनिक दृष्टिकोण को व्यक्त किया है। 'वसंत आ गया है', 'आम फिर बौरा गए', 'प्राचीन भारत में मदनोत्सव' जैसे निबंधों में भारत में उत्सवप्रियता का स्वरूप स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। 'भारतीय फलित ज्योतिष', 'ज्योतिर्विज्ञान' आदि निबंधो में द्विवेदी का ज्योतिषी रूप दृष्टिगोचर होता है। 'भीष्म को क्षमा नहीं किया गया' जैसे निबंधों में द्विवेदी ने आधुनिक साहित्यकारों के, समाज के अन्याय के प्रति मौन पर प्रकाश डाला है। इन निबंधों में लेखक का लक्ष्य भारतीय संस्कृति तथा इतिहास को उजागर करना तथा साहित्य को समाजोपयोगी बनाने का सन्देश देना है।

पाँचवाँ अध्याय '<u>भाषा एवं शैली</u>' में भाषा की परिभाषा देते हुए साहित्य में भाषा की भूमिका पर विवेचन किया है। आचार्य द्विवेदी की रचनाओं में भाषा तथा भाषागत विशेषताओं पर उदहारण सहित विवेचन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि हर रचनाओं में उनकी भाषा तथा शैली भिन्न है। द्विवेदी की भाषा में संस्कृत का प्रभाव तथा अन्य भाषाओँ का प्रभाव इस अध्याय का विषय बना है।

'<u>उपसंहार</u>' में आचार्य द्विवेदी की रचनाओं की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए यह स्थापित किया है कि उनकी सारी रचनाएँ बिल्कुल प्रासंगिक है। आज का समाज कई तरह की विभीषिकाओं का सामना कर रहा है। प्रेम, करुणा, भाईचारा आदि मूल्य समाज से नष्ट हो रहा है। द्विवेदी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से, मनुष्य को पशुत्व से ऊपर उठाकर, जिस प्रकार उनमें देवत्व प्रदान करने का प्रयास किया हैइसपर विस्तार से विचार किया गया है। द्विवेदी की यह मानवतावादी दृष्टिकोण ही उन्हें अन्य साहित्कारों से अलग कर देता है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए द्विवेदी ने अपनी रचनाओं में संस्कृति-इतिहासमिथक-तत्वों का समावेश किस प्रकार किया है, इसका वर्णन भी उपसंहार का विषयबना है।

Name of the Institution Where the Research programme will be undertaken	Department of Hindi Maharaja's College Ernakulum
Name and Signature of the research Scholar	Sangeetha.P.M

NAME OF THE RESEARCH TOPIC

ITHIHAS-SANSKRITI-MYTHAK-KE PARIPRESHYA MEIN HAZARI PRASAD DWIVEDI KI RACHANAVOM KA VISLESHNAMAK ADYAYAN

इतिहास-संस्कृति-मिथक- के परिप्रेक्ष्य में हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

NAME AND SIGNATURE OF THE RESEARCH SUPERVISING TEACHER

Dr.P.Praneetha
Assistant Professor
Maharaja's College,Ernakulam